LOUIS DUMONT

लुईस ड्यूमां फ्रांसीसी मानवशास्त्री एवं समाजशास्त्री थे। ड्यूमां ने भारतीय समाजशास्त्र में विशेष रुचि ली। ड्यूमां ने जाति व्यवस्था एवं संस्तरण के विश्लेषण में ~~[illegible]~~ त्रैमासिक पत्रिका "Contribution to Indian Sociology" प्रारम्भ की। ड्यूमां ने अपनी पुस्तक Homo Hierarchus में जाति व्यवस्था का सारगर्भित विश्लेषण किया। इस पुस्तक में उन्होंने भारत-विद्या, मानवशास्त्र, और उच्च समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों की बहुकुशलता एवं विद्वतापूर्वक ढंग से समन्वय करके भारतीय जाति व्यवस्था तथा उसके द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया। ड्यूमां जाति व्यवस्था का विश्लेषण पवित्रता के आधार पर किया जो स्वयं में विशिष्ट है। उन्होंने जाति के इतिहास तथा उद्गम सम्बन्धी सिद्धान्तों को लेकर सामाजिक संस्तरण, वर्ण व्यवस्था, अन्तर्जातीय विवाह, जाति पंचायत, अस्पृश्यता, खान-पान सम्बन्धी निषेध जैसे विषयों का विस्तार से विश्लेषण किया। उनके अनुसार जाति व्यवस्था को समझने के लिये भारतीय पौराणिक ग्रन्थों में इस बारे में निहित विचारधारा को समझना आवश्यक है।

ड्यूमां का विचार है कि "भारत एक ऐसा धार्मिक समाज है जो जाति व्यवस्था के शुद्ध संस्तरण व्यवस्था से परिचालित" है। भारतीय समाज में हो रहे परिवर्तन के विषय में ड्यूमां ने लिखा है कि "समाज में परिवर्तन हो रहा है किन्तु समाज का परिवर्तन नहीं हो रहा" अर्थात समाज में निहित संस्थाओं, विषयों में तो परिवर्तन परिलक्षित है परन्तु समाज में संरचनात्मक परिवर्तन नहीं हो रहा। उनका "जाति की दृष्टि से गाँव" और "सम्पूर्णता परक दृष्टि से जाति" सम्बन्धी दृष्टिकोण भिन्न है। ड्यूमां ने भारतीय जाति व्यवस्था और भारतीय गाँव की सामाजिक संरचना के अध्ययन के लिये भारत-विद्या शास्त्रीय दृष्टि एवं संरचनात्मक उपागम दोनों का प्रयोग किया जाना चाहिये।

जाति व्यवस्था विषय पर ड्यूमां के विचारों को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया गया, परन्तु मार्क्सवादी, उत्तर आधुनिकतावादी, प्रकार्यवादी संरचनावादी अथवा अन्य किसी विचारधारा के व्यक्ति हो परन्तु ड्यूमां के विचारों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

ड्युमां ने जाति व्यवस्था के अतिरिक्त दक्षिण भारत में प्रचलित नातेदारी व्यवस्था पर भी कार्य किया उन्होंने **परमलों कल्लार** नामक समुदाय पर गहन अध्ययन किया।

1957 में ड्युमां ने अपने लेख "**भारत के लिये समाजशास्त्र**" में भारतीय समाजशास्त्र की प्रकृति, सिद्धान्त, अवधारणाओं और प्रति विज्ञान के विषय में अपने विचार प्रकट किये जिसके सम्बन्ध में भारतीय और विदेशी समाजशास्त्रीयों ने तीव्र प्रतिक्रियाए स्पष्ट की। इनके अनुसार समाजशास्त्र तो समाजशास्त्र है, उसके सिद्धान्त, अध्ययन उपागम, विषय वस्तु आदि सभी देशों में एक जैसी है, यदि प्रत्येक देश का अपना समाजशास्त्र होने लगा तो समाजशास्त्र का स्वरूप विकृत हो जायेगा। परन्तु **ड्युमाँ**, पोकोक आदि ने इस विचार का समर्थन किया कि भारत के लिये पृथक से समाजशास्त्र सम्भव है। इसके विषय-वस्तु उपागम सिद्धान्त एवं उपागम आदि, भारत के प्राचीन इतिहास एवं महाकाव्यों, पुराणों, धर्मशास्त्रों आदि के आधार पर किया जाना चाहिये जो भारत विद्याशास्त्र के नाम से जाना जाता है।

1955 - Hegde University में "भारत के समाजशास्त्र की पीठ" की स्थापना के अवसर पर कहा कि "भारतीय समाजशास्त्र एक ऐसी विशिष्ट ज्ञान की शाखा है जो भारत विद्याशास्त्र और समाजशास्त्र के संगम स्थल पर स्थित हो।" उन्होंने एक ओर भारतीय समाजशास्त्र को भारत विद्या के आधार पर स्थापित करने व दूसरी ओर भारत विद्याशास्त्र से पृथक रूप में विकसित करने का सुझाव दिया।

ड्युमां ने **वर्णनात्मक समाजशास्त्र** का विचार दिया जिसकी अत्यधिक आलोचना हुई। ड्युमां के विचार कि "जाति व्यवस्था की जड़े ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता में गढ़ी हुई हैं तथा उनके विविधता में एकता, सामाजिक संगठन, संस्तरण पवित्रता - अपवित्रता के सन्दर्भ में साथ परिवर्तन होते हैं, उनके इस विचार की काफी आलोचना हुई।

इस प्रकार ड्युमां ने भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य की न केवल विवेचना की वरन उसको विस्तार भी दिया।